UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180948

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

ıll No. H82/S53Ra Accession No. G.H. 2186

uthor शास्त्री, चतुरसेन।

'itle राधा-कृष्ण। 1946

This book should be returned on or before the date ıst marked below.

ज्ञानधाम-ग्रन्थावली

प्रभात-किरण

राधा-कृष्ण

(अतिन्द्रिय प्रेम का एकांकी)

निर्माता

लोह लेखनी के धनी

आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री

प्रथम बार
जून १९४६

सजिल्द
मूल्य ।।।)

प्रकाशक
साहित्य मण्डल
दास्ते प्रभात-प्रकाशन
दिल्ली

सर्वाधिकार लेखक के आधीन

मुद्रक
धारा प्रेस
दिल्ली

प्रकाशकीय

आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री हिन्दी साहित्य के सिद्धहस्त कलाकार हैं। आपकी देन हिन्दी भारती में अमर है। आपने हमसे बराबर लिख कर देने का वादा किया है। और आपकी लेखनी रोज नवीन रचना-रत्न प्रसूत कर रही है। जो रचना आचार्य अब दे रहे हैं, वह है एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक उपन्यास 'इंदो'। जिसमें जापान के शाही वैभव और सुभाष बोस तथा आई० एन० ए० व गत महायुद्ध की कूटनैतिक बातों का रहस्य भरा है। इसके लिए आचार्य ने गत् नव वर्ष तक दुनियां की गति विधि का अध्ययन किया है यह रचना हम पाठकों को जुलाई तक देने के सब सम्भव प्रयत्न करेंगे।

प्रस्तुत रचनामें आचार्य ने अपनी कलमसे राधा कृष्ण का ऐसा मानवोचित, मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है जिसे पढ़कर आप

प्रेम के सच्चे आनन्द को समझेंगे और पायेंगे अपने ही मध्य में अपने ही जैसा राधा और कृष्ण को ऐन्द्रिय सुख से दूर अतिन्द्रिय सुख की खोज में !!

आचार्य ने इस नवीन शैली में रचित एकांकी द्वारा हमारे समक्ष हमारे अतीतका एक स्वर्ण पृष्ठ रखा है। जो हमें विश्वास है आपको अध्ययन, मनोरंजन और मनन का साधन प्रस्तुत करेगा।

विनीत

नेमचंद जैन 'अग्र'

साहित्यरत्न

साहित्य और साहित्कार

"साहित्य कलाका चरम विकास है और समाज का मेरुदण्ड। धर्म और राजनीति का वह प्राण है, इस लिए इसमें दो गुण होने अनिवार्य हैं, एक यह कि वह आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करे और दूसरे, वह मानवता के धरातल को ऊंचा करे।

सामर्थ्यवानकाल—जैसे जगत के सब तत्वों को दूषित करता है उसी भांति उसने साहित्य को दूषित किया है। इसी से साहित्य ने मानव का हनन किया। उसी भांति, जैसे विज्ञान ने मानव प्राणों का। और यही कारण है कि साहित्य और विज्ञान के इस उद्‌ग्रीव युग में मानव भौतिक और आधिभौतिक विभूतियों का रहस्यविद् होने पर भी अपने चिरजीवन में सर्वाधिक असहाय और भयभीत है।

साहित्य और विज्ञान ही उसे अभयदान कर आप्यायित कर सकता है, यदि वह अपना लक्ष्य मानवता के धरातल को ऊंचा करना बनाले।

मानव विश्व की सब से बड़ी इकाई है परन्तु साहित्यकार मानव नहीं क्योंकि वह अति मानव का निर्माण करता है। वास्तव में साहित्यकार महामानव है!

इसलिए उसका कोई अपना देश, धर्म, राष्ट्र, समाज और स्वार्थ नहीं है और इन सबके प्रति उसका कोई कर्तव्य नहीं है।

उसका काम है निरंतर अतिमानवों का निर्माण करना और मानव आदर्श के लक्ष्य बिन्दु पर उनकी स्थापना करना। यह करने ही से वह मानवता के धरातल को ऊंचा करने में समर्थ हो सकता है।"

चतुरसेन

राधा-कृष्ण

अतीन्द्रिय प्रेम का एक रूपक मय

नूतन प्रणाली पर लिखा हुआ

एकाङ्की छाया नाटक

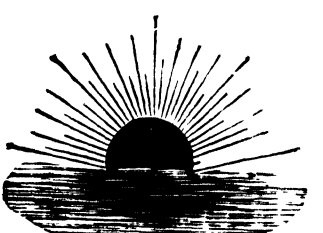

राधा-कृष्ण

दृश्य पहला

समय:—प्रभात

(जमुना के किनारे गोकुल की एक कुंज में राधा पानी में पैर लटकाकर बैठी है। उम्र ११ साल गौर वर्ण, चम्पक रंग के वस्त्र पहने है। धीरे धीरे गा रही है।)

कन्हैया देखत तोरी बाट।
खोले पलक कपाट।
लसे तो बिन सूनो घरघाट,
भए पल पल पै नैन उचाट।
खोले पलक कपाट।
कन्हैया देखत तोरी बाट।

(कृष्ण हंसते हंसते पीछे से आकर आंखें बन्द कर देते हैं। घनश्याम वर्ण आयु ११ साल, पीताम्बर कमर में मोर-मुकुट मस्तक पर और बांसुरी हाथ में। दोनों में बातचीत प्रारम्भ होती हैं।)

"अब तुम बहुत झूठ बोलने लगे कृष्ण, जाओ मैं तुमसे नहीं बोलूंगी"

"क्या रूठ गई राधा ?"

"हाँ, मैं रूट गई हूं"

"नहीं राधा, रूठो मत"

"मैं तुमसे नहीं बोलूंगी।"

"क्यों राधा ?"

"कल तुमने क्या कहा था, याद है ?"

"याद है, मैंने कहा था, मैं तुम्हें कदम्ब की डार पर झुलाऊंगा, तुम्हारे जूड़े के लिए फूल लाऊंगा, यही तो"

"और बांसुरी सुनाने को नहीं कहा था ?"

"हां, हां, कहा था राधा"

"तो तुम क्यों नहीं आये, मैं दिनभर बैठी राह तकती रही।"

"क्या कहूं राधा, मथुरा से अक्रूर जी आए हैं"

"कौन आए हैं?"

"अक्रूर जी, राजा ने बाबा को बुलाया है, वहां यज्ञ है।"
"तुम वहाँ मत जाना, कंस तुम्हें पकड़ कर बाँध लेगा"
"नहीं राधा, मैं उसे एक बार देखूंगा।"
"कृष्ण कंस बड़ा पापी है, बाबा कहते थे!"
"तो मैं उसे मार डालूंगा"
"अरे वह बड़ा बोली है"
"पर मैं मार डालूंगा"
"तुम अकेले उसे मार डालोगे?"
"हम और दाऊ उसे मार डालेंगे, राधा! हम उस...."
"मुझे बड़ा डर लग रहा है कृष्ण! मत जाओ।"
"जाऊंगा राधा, मैं किसी से नहीं डरता"
"तो तुम मुझे छोड़ जाओगे?"
"मैं दो दिन में लौट आऊंगा"
"नहीं, नहीं मैं, नहीं जाने दूंगी" (रोती है)
"रोओ मत राधा, मैं झट से आजाऊंगा"
"फिर जाओ तुम, हमसे मत बोलो"
"आह, फिर रूठ गई मेरी रानी राधा,! रूठो मत"
"मैं रूठूंगी"
"रानी; राधा रूठो मत!"

"मुझे छोड़ जाओगे तो मैं कैसे रहूँगी ? मुझे कौन बाँसुरी सुनाएगा ? कौन फूल लाएगा ? कौन कदम पर झुलाएगा ?"

" मैं राधारानी, मैं, ! मैं तो कल-ही आजाऊंगा !"

"कल ?"

"हाँ हां कल"

"झूठे"

"नहीं सच'

"सौगंध खाओ"

"अच्छा खाई"

"यों नहीं, मेरे सिर पर हाथ धरो"

"लो अब खुशी हुई"

"अच्छी बात है' कल नहीं आए तो मैं कभी न बोलूंगी, कभी ।"

"अच्छी बात है, राधा !"

"और लाओ बंसरी' मुझे दो, मैं रखूंगी । कल यहीं बजाना इसे तुम !"

"लो !"

"और जब तुम कल आओगे तो मैं तुम्हें एक अच्छी सी बात सुनाऊंगी।"

"कौन सी बात, राधा?"

"एक बात है;

" अभी सुना दो"

"न"

"सुनादो"

"न-न-न"

"तो मैं गुदगुदी करता हूँ!"

(राधा खिलखिला कर हंसती है)

'छोड़ दो-बड़े खराब हो।" (हंसी)

"तो कह दो"

"न-न अरे छोड़ो तुम्हारे हाथ जोड़ूं"

"कहो फिर?"

"छोड़ दो तुम्हारे हाहा खाऊं!" (जोर से हंसती है)

"कहो-कहो!"

"तुम्हारे पैर पड़ूं तुम्हारी सौंह....."

"कहो ,जल्दी कहो!"

"अच्छा कहती हूँ, छोड़ो"

"अच्छा कहो"

"यह बात है"

"क्या बात है ?"

"अच्छी सी बात है"

"कहदो न फिर"

"नहीं कहते"

"तो फिर गुदगुदी करता हूँ"

"(ज़ोर से हंसकर) नहीं-नहीं कहती हूं"

"कहो"

"लाज आती है"

"कहो-कहो"

"बाबा मैया से कह रहे थे"

"क्या ?"

"नहीं कहती, जाओ"

"अच्छा मत कहो"

"रूठ गए"

"....."

"कृष्ण !"

"....."

"कन्हैया! "

"....."

"रूठो मत, कहती हूँ "

"मत कहो, क्या जरूरत है !"

"कहती हूं सुनो "

"ना, मत कहो"

"हमारा तुम्हारा ब्याह होगा "

"ब्याह ?"

" हां जब हम बड़े हो जायेंगे "

"बाबा कहते थे ! "

" हां, और मैया भी "

" तब तो खूब मजा होगा "

" क्या होगा?"

" मैं तुम्हें खूब दुःख दूंगा "

" और मैं खूब रूठूंगी "

"रूठ कर देखकर भी लेना, मैं घर से भाग जाऊंगा "

"भाग कर देख भी लेना, मैं अन्न-जल छोड़ बैठूंगी"

"जरूर छोड़ बैठोगी"

" जरूर भाग जाओगे, पैरों से लिपट कर पड़ जाऊंगी फिर कैसे भागोगे।

" मैं भी गुदगुदा कर बेहाल कर दूंगा, फिर कैसे रूठोगी ?"

" कृष्ण तुम बड़े बुरे हो "

" राधा तुम बड़ी अच्छी हो "

(दोनों हंसते हैं)

(पट-परिवर्तन)

दृश्य दूसरा

स्थानः—मथुरा का राजभवन

समयः—दोपहर

(कंस के ध्वंस होने के बाद बलराम और कृष्ण बातचीत कर रहे हैं)

"दाऊ !"

"क्या है कृष्ण ?'

"कंस मारा गया, मैया और बाबा कैद से छुट गए, अब गोकुलो।"

"गोकुल हमारा जाना नहीं होगा"

"क्यों नहीं होगा दाऊ ?"

"और भी बात है, सुना नहीं, जमाई का मारा जाना सुन कर जरासन्ध मथुरा पर चढ़ा आरहा है।"

"मथुरा पर चढ़ा आरहा है ? "

"हाँ, कृष्ण, मथुरावासी बहुत डरगए हैं, हमें यादवों की सैना तैयार करनी है।"

"परन्तु राधा ने कहा था·····।"

"कृष्ण यह राधा की बात करने का समय नहीं, यादवों को इकठ्ठा करो, उन्हें हथियार बांट दो, घोड़ों को देखलो। कृष्ण, मथुरा को बचाना होगा।

" दाऊ, मैं जरा गोकुल·····।"

"छीः छीः कृष्ण, अभी बहुत काम है जरासन्ध बाज की तरह झपटा आ रहा है। जाओ तुम सेना को हथियार बाट दो, मै किले के फाटक पर पहरा बैठाता हूँ।

(दोनों दो ओर जाते हैं)

परिवर्तन)

दृश्य तीसरा

स्थानः–गोकुल में वृषभानु का घर

समयः–संध्या काल

(मथुरा से गोकुल लौटकर राधा और वृषभानु बातें करते हैं)

"कृष्ण नहीं आए दादा"

" न "

"नहीं आवेंगे ? "

"न राधा "

"क्यों, उन्होंने तो कहा था"

" न आ सकेंगे "

"उन्हें राजा ने बांध लिया है ? "

"उन्होंने राजा को मार डाला "

" राजा को ?

"हां, और वसुदेव-देवकी को कैद से छुड़ा दिया'

"वसुदेव-देवकी कौन है"

"कृष्ण के मैया-बाबा"

"कौन !!!"

"वसुदेव-देवकी !"

"पर कृष्ण के मैया-बाबा तो नन्द-जशोदा हैं ।"

"अरी पगली, जसोदा-नन्द ने तो उन्हें पाला था ।"

"कृष्ण ?"

"हाँ अब वे राजा हैं"

"राजा ! अब वे गैया चराने नहीं आवेंगे ?"

"नहीं री पगली, नहीं"

"और बाँसुरी भी नहीं बजायेंगे ?"

"नहीं, अब नहीं"

"और....और (रोते-रोते हिल्कियां बंध जाती हैं)

"रो मत राधा"

" वे तो कह गए थे"

"कह गए होंगे"

"कसम खा गए थे"

"लड़कपन की बातें"

"मैं जाऊंगी बाबा"

"नहीं बेटी वहां हमारा काम नहीं है"

"बाबा, मैं कृष्ण के पास जाऊंगी"

"नहीं बेटी हम, गरीब-अहीर हैं, वे राजा हैं"

"हम अहीर वे राजा ?"

"हाँ बेटी यह तो भगवान की माया है"

"तो कृष्ण नहीं आवेंगे ?"

"न, न आयेंगे"

"अच्छी बात है"

(रूठ कर उठ जाती है)

पट-परिवर्तन !

दृश्य चौथा

स्थानः—मथुरा का राजोद्यान

समयः—आधी रात

(कृष्ण अकेले बेचैनी से टहलते हुए स्वगत बोल रहे हैं)

"उसने कहा था न आओगे तो रूठ जाऊँगी, मै नहीं जा सका, तीन बरस बीत गये, वह रूठी होगी, रोई भी होगी, अब भी रोती होगी, राधा-राधा- ! उसने कहा था.....! ओफ, तीन साल में क्या हो गया, जरा सन्ध बवन्डर की तरह आता है और यादों को घास फूंस की तरह काट जाता हैं, वृज में विधनायें भर गई हैं । जिधर जाता हूं उनका रोना सुनकर कलेजा पक गया, एक पल को फुरसत न मिली, राधा, तुम अभी मेरी बाट जोह रही थी। आह तुम्हारा बाल सखा कृष्ण क्या था और क्या हो गया, राधा मैं अभी आता हूँ, मैंअभी गोकुल जाऊंगा, ब्रजबालाएं रोती रहें, जरासिंध आता रहे, मथुरा लुटती रहे, मैं राधा को देखूंगा वह

रूठेगी, मैं उसे मनाऊंगा, वह रोयेगी, मैं आसू पूछूंगा और मै एक दिन उससे व्याह करूंगा, कौन आ रहा है ? ऊद्धव है।"

(ऊद्धव आते हैं)

"भैया ये सब गोकुल से आते हैं,

"कौन ऊद्धव,

"वृषभान, दादा और मैया जसुमति,

"सच ? वे आऐ है ? कहाँ है, कहां है,

"इधर ही आ रहे हैं"

ऊद्धो, वे क्यों आए हैं.

(वृषभानु आदि आते हैं)

"तुम्हारी जय हो कृष्ण ! हम तुम्हें न्योता देने आए हैं।,,

"न्योता"

"हाँ भैया, राधा का व्याह है।"

"राधा का व्याह ?"

"हां भैया, बेटी तो परायाधन हैं, न राजा के खो न रंक के, राधा स्यानी भी तो हो गई है ?"

"स्यानी"

"भैया तुम्हें आना होगा, तुम्हारे बिना व्याह सूना रहेगा,

"व्याह सुना रहेगा ?"

"भैया क्या कहें, हमारी बड़ी इच्छा थी कि राधा का व्याह तुमसे हो, राधा भी बहुत खुश थी, पर क्या कहें, व्याह-वैर और प्रीति बराबर वालों ही में होती है हमें क्या खबर थी भैया कि तुम राजा हो, नन्द-महर ने यह भेद खूब छिपा रखा था, अब अहीर की बिटिया राजा के बेटे से कैसी व्याही जाती भैया ? हम इनकार कर बैठें पर वर अच्छा मिला है !"

"अहीर की बिटिया, राजा का बेटा, अच्छा वर भला है !"

"कृष्ण तुम्हें यह क्या हो गया ?"

"अरे दोड़ो, कृष्ण को क्या हो गया,

"बेहोश हो गये,

"अरे दौड़ो, ऊधो—दाऊ को बुलाओ !"

"अरे दौड़ो !"

"कृष्ण बेहोश हो गये !"

"कृष्ण बेहोश हो गये !"

"कृष्ण बेहोश हो गये !!"

"कृष्ण बेहोश हो गये !!!"

(कुछ लोग आते हैं सब कृष्ण को उठाकर ले जाते हैं ।)

पट-परिवर्तन

दृश्य पांचवा

स्थान--बरसाने में राधा का पतिगृह ।

(राधा और उसका पति बातचीत कर रहे हैं)

"कहाँ गई थी री तू निलज्जी"

"कृष्ण का सन्देश पूंछने, उद्धव जी मथुरा से आए हैं"

"क्यों गई थी तू ?"

"कृष्ण का संदेश लेने, कृष्ण का, वे कृष्ण के पास से आये हैं"

"तुझे उसका नाम लेते लाज नहीं आती"

"ना"

"गाँव भर में तो बदनामी फैली है"

"मैं क्या जानू ?"

"कौन है कृष्ण तेरा ?"

"मैं ही कृष्ण हूं, मेरे रोम २ में कृष्ण है"

"कहता हूँ, अब उसका नाम न लेना"

"कृष्ण का ?"

"उसका नाम न ले"

"कृष्ण का ?"

"मार खायगी ?"

"हरे कृष्ण, मारो तुम"

"तो ले, (चाबुक की मार)

"हरे कृष्ण !"

(चाबुक बड़ी मार)

"हरे कृष्ण !!"

(चाबुक की मार)

"हरे कृष्ण !!"

(चाबुक की मार)

"हरे कृष्ण !"

(बार बार जल्दी २ चाबुक की मार)

"हरे कृष्ण, हरे कृष्ण"

"मरना ही चाहती है ? तो मर !" (जोर से प्रहार)

" (जोर से) हरे कृष्ण ! (क्षीण स्वर से) हरे कृष्ण !!

"बेहोश हो गई ?" (स्वगत)

"या मर गई ?"

"मर गई ?"

"नहीं बेहोश हो गई,,

" अरे मर गई"

"नहीं जीती है, देखो आंखें खोली "वह होंठ फड़के।

"ह...रे ! कृ....ष्ण !!"

पट-परिवर्तन !

दृश्य छठा

(गोकुल के रास्ते में राधा, कुछ बालक और कुछ औरतें।)

"राधा, कृष्ण आए हैं"

"कहाँ आए हैं भैया, कहां हैं ? बतादो"

"ही-ही-ही-ही (हंसते हुए भागते हैं)

"अरी राधा, कृष्ण को बुलादें ?

"बुलादो सखी, गुन गाऊंगी"

"अच्छा राधा गाओ तो तनिक ?

"गाऊँ ? सुनो !"

दरस बिन दूखन लागे नैन।
जब से बिछुरे कृष्ण कन्हैया कबहूं न पायो चैन,
बोल सुनू तो छतिया धड़के मीठे लागे बैन॥
इक टक बैठी बाट जोहती भई छैमासी रैन।
बिरह बिथा कैसे कहूं सजनी सुख मैटन दुख दैन॥

"राधा, कृष्ण का तू क्या करेगी ?"

"देखूंगी बहन, बहुत दिन से नहीं देखा !

"देखकर क्या करेगी राधा ?"

"मैं नहीं जानती, मैं तनिक देखूंगी"

"चलो री चला, पगली के मुंह कहाँ तक लगें"

"कहती है देखूंगी, लाज भी नहीं आती"

"अरी कुलकान डुबोदी इसने, रात दिन कृष्ण ही कृष्ण रटती है"

"पिटती भी तो है"

"कितना सूख गई है !"

"बुढ़िया सी हो गई है !"

"न खाती है न पहनती है"

"पगली है बेचारी, सुन राधा"

"हाँ सखी"

"देख, कृष्ण का नाम लेना छोड़ दे"

"कृष्ण का ! ऐसा न कहो बहिन"

"अरी तुझे लाज भी नहीं आती"

"न बहिन"

"कृष्ण तो राजसुख भोग रहे हैं"

"सच ?"

"अरे, उन्होंने रुक्मणी से ब्याह किया है"

'सच ?"

"अरे सत्यभामा से भी"

"अहाः हाः तो कृष्ण खूब सुखी है"

"और फूटे मुंह कभी तेरा नाम नहीं लेते"

' ऐसा न कह बहिन"

"कुछ मोह होता तो आते नहीं"

"वे आवेंगे सखी, जरूर आवेंगे"

"अरी भोली, अब कब आयेंगे ? १८ बरस तो बीत गए"

"हां बहन, बीत तो गये ? पर जैसे अभी गए हों। अभी बंसी बजाई हो" (गाती है)

मैं सावरे के रंग रंगी।
होन दे बीसो बिसे ही हंसी
मन मूरत सांवरी ऐसी बसी

गांव को, गेह को, देह को नेह
सनेह सखिन को छोड़ भगी
मैं सांवरे के रंग रंगी
सोच संकोच को ख्याल कहां
गति बावरी मेरी बनी सी बनी
अब रीति कहा, अनरीति कहा सखि,
अखियां जो लगीं, अखियां न लगीं।

(गाते गाते तन्मय हो जाती है।)

पट-परिवर्तन

दृश्य सातवाँ

स्थान--मथुरा का राजभवन।

समय—निशा का प्रथम पहर।

(श्रीकृष्ण और उद्धव बात चीतकर रहे हैं)

"अठारह बरस बीत गए, क्यों उद्धव ?"

"बीत तो गये"

"तुम गोकुल गये"

"गया तो था"

"गोकुल तो यहां से तीन ही कोस है"

"हां तीन कोस"

"हमें वहाँ से आए अठारह बरस बीत गए।"

"बीत ही गए"

" उद्धव "

" हां भैया "

"राधा देखी थी ?"

"देखी थी "

" कुछ कहती थी ? "

"क्या कहूँ ? "

"कहो उद्धव "

"उसने मुझे ही कृष्ण समझ लिया "

"तुमको ? "

"हां, और कहा—इतने दिन में आए हैं ? "

"फिर ? "

" मैंने कहा, मैं उद्धव हूं "

"तब ? "

"वह रोने लगी "

"रोने लगी ?"

" रोने लगी ? "

"मैं वह रोना न देख सका भैया। जैसे नदी का बांध टूट गया हो, मैं उसे धरती में पड़ी रोती छोड़, भाग आया "

"भाग आये ? ढारस नहीं दिया ? "

"हिम्मत न हुई भैया, पीछे सुना"

"क्या सुना ?"

"जाने दो उसको"

"कहो उद्धव"

"उसके पति ने उसे खूब पीटा"

"(चीखकर) आह!"

"भैया, शान्त हो"

"अच्छा, और क्या देखा"

"राह-बाट में बालक उसे तुम्हारा नाम ले ले कर छेड़ते हैं, हंसते हैं"

"यहां तक ?"

"ब्रज-वधू उसे कुलटा कहती हैं !"

"(गर्जकर) चुप रहो"

"गाँव वाले उसे पागल समझते हैं उस पर दया दिखाते हैं।

"राधा पर दया दिखाते हैं ? राधा पर ?

"हां भैया ?"

"चलो यहां से उद्धव ?"

"मथुरा से ? "

"नहीं, ब्रज से भी "

" कहाँ भैया ? "

" दूर, दूर, ब्रज से बहुत दूर "

" जरासन्ध इस बार कालनेमि को चढ़ाए ला रहा है'

" आता रहे "

"मथुरा का क्या होगा "

"जो होना हो सो हो "

" १६ हजार ब्रज-विधवाएं तुम्हारे सहारे जीती हैं उनका क्या होगा ?"

" जो होना होगा सो होगा"

" भैया !"

" आज ही चलना होगा उद्धव, जाओ तैयारी करो, मैं दाऊ से कहता हूं "

" सुनो भैया "

" जल्दी करो उद्धव"

"दादा !...."

(कृष्ण द्वार की ओर संकेत करते हैं और पट-परिवर्तन !)

दृश्य आठवां

स्थान—द्वारिका के राजोद्यान का कुंज।

समय—संध्या।

(कृष्ण से रुक्मणी और सत्यभामा बातें कर रही हैं।)

"महाराज, वह राधा कैसी है?,,

"राधा?,,

"हां जी हां, राधा!,,

"कौन राधा रुक्मणी?"

"अजी वही जो आपके घट घट में है, सोते जागते उठते बैठते जिसकी याद में आप चौंक उठते हैं।"

"वह!"

"हां वह, और बताऊं? वह अहीर की बिटिया।"

"राधा"

'हां, राधा-राधा-राधा-राधा कितनी बार कहें ? कहिये वह राधा कौन है ?"

"प्रिये, इसका कोई तो पता नहीं लगता !"

"महाराज को कुछ पता ही नहीं लगता ?"

"नहीं लगता प्रिये"

"लोग तो कहते हैं कि महाराज अन्तर्यामी हैं ?"

"लोग ऐसा कहते हैं ?"

"हां, कहते हैं, महाराज से दुनिया की कोई बात छिपी ही नहीं हैं"

"अच्छा यह बात है।"

और राधा का आपको कुछ पता ही नहीं है, अजी कृपानिधान ! यह झांसा कहीं किसी और को दीजिए, कहिए कौन है राधा ?

"हां, और वह कैसी है ?" (सत्यभामा)

"कैसी ?"

"और उसका रूप कैसा है ?"

"रूप !"

"हां जी रूप ! क्या वह बहुत सुन्दर है ?"

"सुन्दर ?"

"आप उसे बांसुरी सुनाया करते थे ?"

सुनाया तो करता था"

"वह आपसे रूठती थी, तब मनाया भी करते थे)

"हां हां मनाया करता था"

"उसे कदम्ब की डार में भुलाया करते थे ?"

"हां, हाँ, झुलाया करता था"

"तो कहिए प्रभो, वह कौन है ?"

"वह राधा है"

"अजी वह आपकी लगती क्या है ?"

"वह मेरी राधा लगती है"

"आप कभी किसी और को भी झुलाते हैं ?"

"न"

रूठने पर मनाते हैं ?"

"न"

"चोटी में फूल गूथते हैं ?"

"न"

"तो महाराज, आप वहीं जाइए, राधा के पास जाइए, हम लोग आपकी कौन हैं। लो हम जाती हैं, चलो बहन !"

(दोनों चली जाती हैं)

"सुनो, सुनो, प्रिये, रुक्मणी, सत्यभामा ! ओफ ! चलीं गई ? तीखे तीर मारकर, घाव को निर्दयता से नोचकर ! बेचारी भोलीभाली बालायें, जिनके नन्हें से प्राण उनके छोटे से हृदय में बसे हैं, छोटी सी उनकी नजर है, उस नजर ही में उनका संसार है, कहती है, राधा कैसी है ! राधा कैसी है !! राधा कैसा है !!!

(फूट फूट कर रोते हैं)

पट-परिवर्तन !

दृश्य नवां

स्थान—मंत्रणागृह।

समय—चार घड़ी उत्तरान्त दिवस।

(श्री कृष्ण—बलदेव—बात चीत कर रहे हैं।)

"बड़ी आफत है कृष्ण कुछ समझ में नहीं आता !"

"क्या हुआ दाऊ ?"

"शिशुपाल का जुल्म तो अब सहा नहीं जाता"

"दाऊ, क्या किया जाय, उसकी सेना अपार है"

"उधर इन्द्रप्रस्थ से युधिष्ठिर का बुलौवा आया है। यज्ञ है।

"आप जाइए दाऊ, युधिष्ठिर का यज्ञ पूरा कराइये ! यहाँ मैं सब देख लूंगा"

"नहीं कृष्ण तुम्हारे बिना नहीं चलगा पाण्डवों के बहुत दुश्मन है"

"आपके रहते सब ठीक हो जायगा दाऊ !"

"नहीं कृष्ण तुम्हें चलना होगा"

"तब तो पीछे से शिशुपाल द्वारिका को धूल में मिला देगा ?

"शिशुपाल भी तो यज्ञ में जायगा।"

"यह खबर पक्की है क्या ?"

"बिल्कुल पक्की"

"तब चलो दाऊ इन्द्रप्रस्थ चलें"

"कहीं वहाँ शिशुपाल से रार न ठन जाय"

"देखा जायगा, आप तैयारी कीजिए।"

"चलो तब इसे लौटने पर समझेंगे"

"वह लौटने न पायेगा दाऊ !"

"कृष्ण, यज्ञ में भंग न करना"

"चलिए, दाऊ, सब देखा जायगा"

"अच्छा फिर ऐसा ही हो, हम लोग ब्रजमण्डल होकर चलेंगे, ब्रज को देखे जुग बीत गये !"

"दाऊ, हमें पच्छिम की राह चलना होगा। इन्द्रप्रस्थ की वही राह ठीक है।"

"काँप क्यों रहे हो कृष्ण, अरे गिरे पड़ते हो, क्य हुआ ?"

(संभालते हैं)

"कुछ नहीं, दाऊ ? अब में ठीक हो गया"

पट-परिवर्तन

दृश्य दसवां

(इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठर के यज्ञ में कृष्ण और नन्द बातें कर रहे हैं)

"भैया कृष्ण, तुम हमें ऐसा भूल गए ?"

"नहीं बाबा, सदा आपके चरणों का ध्यान रहता है"

"तुम्हारी मा रोते रोते अंधी हो गई"

"मेरी जसोदा मैया"

"और राधा पगली हो गई"

"बाबा, ब्रज में और तो सब अच्छे हैं"

"कृष्ण एकबार ब्रज में चलो, सब तुम्हें याद करते हैं। आती बार भी बचकर चले आए, अब लौटती बार तो चलना ही होगा।"

"आऊंगा बाबा ! मैया से कहना, इस कुपूत के लिए "रोवे नहीं।"

"याद है कृष्ण जब तुम ग्यारह बरस के थे और जब मथुरा को चलने लगे थे, तो उसने कहा था जै दिन में लौटै उतना दिन का कलेऊ कन्हैया के लिए लेतें जाओ। तब तुमने हँसकर कहा था मैया मैं तो कल ही आ खड़ा होउंगा, सो तुम उस दिन आए सो आए। उस बात को आज ६० बरस हो गए'।

"हां बाबा ६० बरस हो गए"

"युग बीत गए कृष्ण पर हम और तुम्हारी मा वही है"

"बाबा तुम्हारा यह पुत्र भी वही है"

"तो चलो फिर ब्रज को, यज्ञ तो हो गया, शिशुपाल भी मारा गया।"

"तुम सब जने चलो बाबा, हम पीछे से आते हैं"

"अरे कृष्ण तू बचपन का छलिया है"

"न दादा"

"अरे रो मत कृष्ण"

"दादा" (फूट २ कर रोते हैं)

"रोओ मत कृष्ण रोओ मत, अरे पुत्र" आह"

(सब रोते है) पट-परिवर्तन

दृश्य ग्यारहवाँ

स्थान—व्यास-आश्रम

(श्री कृष्ण, अर्जुन और व्यास तीनों बातें कर रहे हैं)

"भारत के आकाश में काले बादल घिरे आ रहे हैं। वे कब कहां बरस पड़ेंगे नहीं कहा जा सकता, जरासन्ध शिशुपाल, जयद्रथ सब लड़ाई के लिए कमर कसे बैठे हैं। देश में आग सुलग रही है। चाहे जब वह भक से जल जायगी। यदि इन्हें मनमानी करने दिया जाय तो भारत का केन्द्र नष्ट हो जायगा। और ये सब राजा टूटे हुए नक्षत्रों की भाँति टकरा कर विश्व को नष्ट कर देंगे। मुनिवर, क्या मैं चुप चाप यह सब देखता रहूं।"

'कृष्ण, तुम तो यह कहते हो, पर देश के सब नर नारी क्या कहते हैं, यह भी तुमने सुनी, वे सब घबराए हुए

हिरन की भांति चौकन्ने होकर तुम्हारी ओर ताक रहे हैं। धर्म राजनीति और समाज तीनों में तुम गड़बड़ी किया चाहते हो, इसी से वे कहते हैं तुम्ही सब झगड़ोंकी जड़ हो।

धन्य मुनिवर, जिन्होंने विशुद्ध वैदिक धर्म को हिंसक यज्ञ बना दिया। एक आर्यजाति के प्रथम चार फिर अनगिनत टुकड़े कर दिये। भारत के अनार्यों का सर्वस्वहरण कर उन्हें दास बना लिया—वे सब इस झगड़े की जड़ नहीं हैं?"

"परन्तु कृष्ण तुम क्या काल के पट से दो युगों के चिन्हों को धो डालना चाहते हो? आर्यों को फिर उत्तर कुरू की ओर भेज देने की सामर्थ्य तुममें है?"

"नहीं, मैं तो यह नहीं चाहता, पर जैसे मनुष्य का शैशव, यौवन, वार्धक्य होता है, वैसे राष्ट्रका भी होता है। बालक चांद को देखकर हंसता और गर्जते बादल को सुनकर भय से रो उठता है। परन्तु युवा होने पर वह नई नई बातें सोचता है, ज्ञानार्जन करता है। वही दशा राष्ट्र की है, सतयुग में राष्ट्र की बाल्यावस्था थी, त्रेता में किशोर, अब उसके यौवन का उदय है उसमें स्वतन्त्रता-दबंगता

उमंग और आशा की लहरें उठ रही हैं उसका निमंत्रण आवश्यक है। हम तीनों यह करेंगे। आपका ज्ञान और अर्जुन का बल लेकर मैं कर्मक्षेत्र पर आक्रमण करूंगा।

"अकेले तुम यह कर सकोगे कृष्ण ?

'मैं अकेला क्यों हूँ, विश्व की भावना मेरे साथ है हम विश्वमय है। सोऽहम ! मैं ही विश्व हूं। मैं आपके और अर्जुन के मन में जैसा बसता हूं वैसा ही सब प्राणियों के मन में। मै विश्वरूप और विश्वप्राण हूँ। यह मेरे हाथ में नीति का सुदर्शन है और दूसरे में धर्म का महाशंख इसमें से वज्रध्वनि निकलती है।

"सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,

"विश्व मेरा कर्मक्षेत्र विश्व का कल्याण मेरा धर्म है। मित्र अर्जुन तुम अपना बल लेकर और मुनिवर तुम अपना ज्ञान लेकर मेरे इस कार्य का विस्तार कर दो।"

"कृष्ण, यह क्या ? क्या तुम वही बसुदेव पुत्र गाय चराने वाले कान्हा हो ? तुम्हारा यह महाधर्म तो मुनि भी नहीं समझ सकते। जब मैंने सुना कि गोकुल में

एक दिव्य कुमार का जन्म हुआ है, और वह बड़े २ अद्भुत कर्म कर रहा है। जिसमें गोप गोपिकाओं ने प्रेमवश हो देहाभिमान खो दिया है। तभी मैं समझ गया था कि द्वापर का अन्त हो चला और नवीन युग का आरम्भ होगा। बजाओ कृष्ण अपना शंख और चलाओ चक्र, मैं इस महायुद्ध को स्वीकार करता हूँ।"

"और मैं भी"

"दो तो नवयुग स्थापना में योग !"

पट-परिवर्तन

दृश्य बारहवां

स्थान–कुरुक्षेत्र वा रणस्थल।

समय–संध्या।

(उत्तरा और सुभद्रा महाभारतके बाद कुरुक्षेत्र में बातें कर रही हैं)

'मैं कौन हूँ ?"

"बेटी, तुम उत्तरा हो।"

"उत्तरा कौन ?"

"विराट राजनन्दिनी उत्तरा।"

"उत्तरा, मैं उत्तरा, विराट् राजनन्दनी उत्तरा ?"

"हां बेटी।"

(शीशे में अपनी परछांई देखकर)

"यह कौन ?"

"यह तुम्हारी ही परछांई है बेटी।"

"यह मेरी परछांई; मैं उत्तरा ? विराट राज....सफेद

बाल, यह मुंह, ये आँखें, उत्तरा...?"

"बेटी, आज छै दिन में तुम्हें होश हुआ है, तुम्हारे जीने की आशा न थी, कृष्ण ने तुम्हें बचा लिया।

"दयामय कृष्ण ने इस अनाथ सूखी लता को क्यों बचाया? आग में क्यों न फेंक दिया।"

बेटी, तू इस कुरुकुल की लक्ष्मी है, तेरे गर्भ में कुरु-कुल का अंकुर है।

"हाय न जाने इस कुरुक्षेत्र में कितनी उत्तराओं का भाग्य फूटेगा"

"युद्ध हो चुका"

'हो चुका? इस कालयुद्ध में कौन २ बचा?'

'कौरवों' में कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा'

"पाण्डवों में?"

"पाण्डव, सात्यकि और कृष्ण को छोड़ कोई नहीं बचा।"

"सब वीर खेत रहे?"

"६६ करोड़ वीर खेत रहे, जगत की यह महाज्वाला क्षत्रिय बन को भस्म करके बुझ गई। अभिमयु के

मरते ही अर्जुन ने ज्वालामुखी का रूप धारण किया। द्रोण के दो दिन बाद कर्ण और फिर उसके बाद एक ही दिन में शल्य और दुर्योधन"

"अच्छा अब मैं जाऊँगी।"

"कहां बेटी ?"

"वहीं पति की चिता पर"

"बेटी, पति की चिता पर प्राण देने से बढ़कर क्या स्त्री के लिए दूसरा धर्म नहीं है ? अब तू पति-प्रेम को भुलाकर पुत्र-प्रेम को मन में स्थान दे। बेटी अभिमन्यु ने अपनी छाया तेरे गर्भ में स्थापित की है, उस छोटे से अभिमन्यु के खेल हम तुम दोनों देखेंगी फिर उसे भारत के सिंहासन पर बैठाकर सुख मानेगी।

"अच्छा मा ! ६ महीने मैं उस चिता भस्म को मस्तक पर लगाकर जीवित रहूँगी। तुम्हारी ही इच्छा पूरी हो।

(दोनों जाती हैं)

पट-परिवर्तन !

दृश्य तेरहवां

(कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में महाभारत की समाप्ति पर अकेले कृष्ण भटक रहे हैं)

"कैसा भयानक दृश्य है, लाखों विधवाऐं छाती कूट कूट कर सिर धुनती हुई बाल खोले अपने पति पुत्रों की लाश खोजती भटक रही है। अनगिनत चितायें धांय धांय जल रही हैं, उनकी परछाई जल में पड़ने से पानी में भी अनगिनन चिताएं जलती दीखती हैं! कौवे अधमरे वीरों की आँखें निकाल रहे हैं—वे दर्द से चीख रहे हैं, गीध मुर्दों की आँत खींच खींच कर उड़ रहे हैं और चीले झपट्टा मार मार कर उसे छीन रही हैं। अनगिनत लांशें सड़ रही हैं एक महाचिता पर लाखों वीर सिपाही जल रहे हैं—चर्बी की आवाज और दुर्गन्धि से प्राण निकल रहे हैं। ये चिताएं तो धीरे २

जलकर ठंडी हो जायँगी— पर मेरे हृदय में जो चिता धधक रही है क्या वह भी कभी ठण्डी होगी ? जिनके सिर पर कभी हीरों के रत्नमुकुट जगमगाते थे वे धूल में लुढ़क रहे हैं जिनके चरण की धमक से धरती धमकती थी ! वे रूण्ड मुण्ड इधर उधर पड़े हैं उफ सारी दुनियां की राजगद्दियाँ सूनी हो गई बड़े बड़े पुराने राजवंशों का चिराग बुझ गया। आह आज भारत और उसके उपनिवेशों में एक भी जीवित योद्धा नहीं बचा।

जिधर जाता हूं लोग उंगली उठाते हैं, कहते हैं यह है वह हत्यारा, सब झगड़ों की-जड़, लोग मुझे झूठा-लुच्चा कुटिल और लम्पट न जाने क्या कहते हैं, वाह ! अच्छा जीवन बीता, आदि से अन्त तक दुःख, मुसीबत, लड़ाई झगड़े भाग-दौड़ रोना-पीटना बदनामी से भरा हुआ मैं बन्दीघर में जन्मा, वे बेचारे मेरे दुखिया माँ बाप जिनके बच्चे जन्मते ही पत्थर पर पटक-पटक कर दे मारे गये थे, उन्होंने जान पर खेल कर मुझे बचाया, मैं जिया, कंस को मार कर उसके बाप को राज दिया, जरासंध को मार कर

पाण्डवों का यज्ञ कराया, अब इस नरमेध में पाण्डव जीते, मुझे कब क्या मिला? अपने लिए मैंने क्या किया?

सारे देश में घर घर राजा बन गये थे। राह से एक मुट्ठी धूल उठाई जाती तो उसमें दो चार राजा निकल आते, सब पागल कुत्तों की तरह आपस में लड़ते थे, सम्पूर्ण देश का अपना कहने वाला कोई न था, मैंने सोचा इन सब छोटी २ शक्तियों की एक बड़ी शक्ति या एक बड़ा साम्राज्य हो जाय, जिसमें तमाम देश में एक ही शासन हो तो अच्छा। पहले मैंने यज्ञ की युक्ति सोची थी,। युधिष्ठिर धर्मात्मा थे उन्होंने यज्ञ किया सब राजा उसमें आ; उन्हें अपना महाराज माना, मैंने सोचा अच्छा हुआ बिना ही अधिक खून खराबी के भारत का साम्राज्य बन गया पर घमण्डी दुर्योधन से न सहा गया। जुए का पाप रचकर उसने सारे किए कराए पर पानी फेर दिया। फिर तो मुझे यह कड़वी घूट पीनी ही पड़ी, मैंने पृथ्वी की शक्तियों को रक्त के रंगे अक्षत से न्योता दिया, और अब वे सब इस कुरु-क्षेत्र में खेत रहे। क्या यह मैंने बुरा किया? अब

पाण्डवों का सिंहल से काश्मीर तक और सौवीर से सुह्म तक अकेला राज्य हो गया। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक शक्ति, एक प्रबंध एक राज्य होने से प्रजा को सुख होगा लड़ाई झगड़े सदा के लिए मिट जाएगें। कृषि व्यवसाय सभी व्यापार बढ़ेंगे। देश फले फूलेगा यही तो मैंने सोचा था, यही तो मैंने किया?

मूर्ख कहते हैं मैंने पाण्डवों की हिमायत की, क्या मैं ऐसा नीच था, भाई बन्दों के थोड़े से स्वार्थ के लिए उन्हें आपस में लड़ा देता? मैंने तो देश की बिखरी हुई राजनीति को एक ठिकाने कस कर बाँधा। फिर भी लोग मुझे गाली देते हैं तो दें। शाप देते हैं तो दें। झूठे, लबार, मक्कार, समझते हैं तो समझें। मैंने सारे जीवन में अपने लिए न कभी कुछ किया न लाभ उठाया, मैं दीपक की तरह जलता और दूसरों को प्रकाश देता रहा परन्तु कुछ भी न हुआ। मनुष्य के गर्म रक्त में अभिषेक किए बिना मनुष्य के दुखों का अन्त नहीं होता यदि नर रक्त से ही उसकी मुक्ति है तो कृष्ण के ही रक्त से विधाता ने क्यों न वसुन्धरा को न्हलाया। १८ दिन

तक जो यह रक्त का समुद्र बहा, उसकी एक २ बूंद कृष्ण के गर्म रक्त की बूंद थी। इनमें से हर एक चिता में कृष्ण का प्राण जल रहा है, परन्तु अभी भी यदि धर्मराज्य की स्थापना हो जाय....(चौंककर) अरे यह कौन रोता कलपता इधर ही को आ रहा है !

"अरे अधर्मी कृष्ण, अब तो तेरी छाती ठण्डी हुई। हाय, मेरे सौ वीर बेटों में से एक भी न बचा, अरे! अब मैं कैसे जीऊंगी, मैं इन बेबस बहुओं का गाय की तरह डकराना कैसे सुनूंगी ? अरे, कृष्ण मुझे भी मार डाल, मुझे जीती ही चिता में झोंक दे, अरे पूरा धर्म लाभ कर ? द्रोण-भीष्म को मार कर तो अधूरा ही धर्म हुआ ? अरे, बताओ तो कहाँ है वह कृष्ण ? वह कुलघाती, वह कौरवों के वंश का नाश करने वाला, हमारा सगा सम्बन्धी कृष्ण !"

हाय, यह तो देवी गान्धारी विलाप करती इधर ही को आ रही हैं ? अब कहाँ भागूँ ? कहाँ छिपूँ ? अरे यह तो शाप देकर मुझे भस्म कर देंगी, हाय ! हाय !! इनका दुःख देखकर तो छाती फटती है, धिक्कार है मुझे

पर! देखो, कैसी गिरती-पड़ती रोती कलपती आ रही हैं! शोक, जैसे दुनियाँ में लाखों आदमी जीते मरते हैं, उसी तरह मैं भी क्यों न जिआ-मरा? मैंने क्यों पराए पूरे में पैर डाला, अरे. इनको पुत्रशोक से छाती फट गई, वे बहुओं सहित इधर को आ रही हैं। भागूं? भागने में ही कुशल है। भागूं फिर।

"भैया, ओ भैया!"

"कौन उद्धव? जाओ जाओ।"

"भागे कहाँ जा रहे हो, सुनो तो"

"अभी नहीं फिर कभी"

"सुनो, सुनो, वे आई हैं"

"भागो-भागो सुनने का कोई काम नहीं है"

"भैया, ऐसे पागल से कहां भागे जा रहे हो वहाँ महाचिता जल रही हैं बचो बचो, सावधान!"

"आह! जीते जी अब मैं जलूँगा"

"भैया, भैया, अरे उधर नहीं"!

"ओह!" (चीत्कार)

"क्या कर रहे हो भैया, ठहरो वे आई हैं"

"आने दो। मुझे क्या ? मैं मरता हूँ"

"भैया, राधा, राधा आई हैं"

"राधा ?"

"हाँ भैया ?"

"राधा ?"

"हाँ राधा आई हैं वे तुम्हें ढूंढ़ती फिर रही हैं"

"ढूंढ़ती फिर रही हैं तो बस—अब...।"

"अब क्या भैया ?"

"मरना होगा"

"नहीं भैया"

"अब मरना ही होगा"

"नहीं नहीं, उधर कहां चले ?"

"छोड़ दो उद्धव, मरना होगा।"

"भैया, तुम कृष्ण हो, दुनिया को धीरज बंधाने वाले आज तुम ऐसे अधीर हो गए !"

"मैं उसे मुंह नहीं दिखा सकता, मैंने उसे बचन दिया था"

"बचन दिया था"

"हाँ, कसम खाई थी, छोड़ दो, उद्धव"

"कब ?"

"बहुत दिन हुए, अस्सी बरस हुए। छोड़ दो। छोड़ दो।"

"अस्सी बरस ?"

"हाँ. अब तक बचता रहा, अब अन्त समय में मैं उसे मुंह न दिखाऊंगा, छोड़ दो।"

"भैया, राधा की आँखें जाती रहीं हैं।"

"आंखें जाती रहीं हैं !"

"वे बहुत कमजोर, बहुत जर्जर हो रही हैं, उनका प्राण उनके शरीर में नहीं है तुममें अटक रहा है, एक बार मिल लो भैया, भवबाधा-से पार हो जायं, बड़ी आश से आई हैं।"

"कौन आई है उद्धव !"

"राधा-राधा !'

"राधा ! (फूट २ कर रोते हैं)

पट-परिवर्तन

दृश्य चौदहवां

स्थान— कुरुक्षेत्र-श्मशान

(राधा कृष्ण को ढूंढ़ती हुई कृष्ण के पास आ रही है)

"कहाँ-कहाँ है कृष्ण कन्हैया ?"

"इधर आओ राधाजी, भैया यहाँ बैठे हैं"

"कहां बैठे हैं ? कृष्ण कहाँ बैठे हैं ?"

"इधर यहाँ बैठे हैं"

"कृष्ण ?"

".....।"

"बोलते क्यों नहीं कन्हैया, रूठे हो ?"

"वे रो रहे हैं राधाजी"

"रो रहे हैं ? कृष्ण रोते क्यों-हो-क्या दुख है बोलो"

"राधा"

"अहा हा ! वही कण्ठस्वर है ! पहचान गई, सो तुम मिल ही गये ?"

"बहुत दिन में मिले राधा"

"पर मिले तो, मैं तो कहती थी मिलेंगे और जरूर मिलेंगें ?

'हंस रही हो राधा ?"

हंसूं ना, कितने दिनों बाद हंसी हूं, जानते हो कृष्ण ?

"शायद अस्सी बरस बाद"

"कुछ याद नहीं कृष्ण, मैं शायद तब हंसी थी जब तुम मेरी चोटी के लिए फूल लेने पानी में घुसे थे और पैर फिसल कर धम से गिर गए थे, खूब हंसी थी याद है कृष्ण ?"

"याद है राधे"

"क्या तुम रो रहे हो कृष्ण"

"नहीं राधे"

"हंसो, फिर एक बार"

"राधे, आँखें जाती रहीं"

"हाँ, कृष्ण बहुत दिन हुए; पर तुम्हें मैं देख सकती हूं"

' मुझे ?"

"हां, देखो. तुम्हारे सिर पर मोर मुकुट है, कमर में पीताम्बर है ' हाथ में बंसी है (सोच कर) ना, बंसी नहीं है ! बंसी तो यह मेरे पास है !

"याद है कृष्ण ! जब तुम गोकुल से चले थे तब मैंने छिपा ली थी।

"याद है राधा"

"कितने दिन हुए कृष्ण"

"अस्सी बरस"

"पर जैसे कल की बात हो"

"ओह !"

"बंसी बजाओगे कृष्ण ?"

"बंसी ?"

"तुमने वादा किया था"

"किया तो था"

'कदम पर भुलाने को भी कहा था"

"कहा तो था"

"झुलादो फिर"

"राधे !"

"झुला दो कन्हैया !!"

"झूलो राधे झूलो और गाओ वही गीत"

"गाऊं ? सुनो—

श्याम कैसी मुरलिया बजाई ।

छोड़ा सब सिंगार अधूरा मैं भोरी उठ धाई ।

सुध बुध भूली ढूंढ फिरि नहिं पाए मैं घबराई ।

झिलमिल तारों की धुंधली सी रैन अंधेरी छाई ।

कौन कुंज में छिप कर मोहन तुमने तान उड़ाई ।

आंसू के उजले मोती—मग में बिखराती आई ।

बिखरा सब सिंगार—हुआ सूना जीवन खिसियाई ।

आज मिले हो मोहन छलिया बात न चले बनाई ।

बंसी का सुर भर दो सूने—प्राणों में सुखदाई ।

श्याम कैसी मुरलिया बजाई ।

"अब खुश हुए कृष्ण ?"

"हाँ राधे, और तुम ?"

"बहुत खुश, अब तुम बंसी सुना दो"

"बंसी ?"

"वहीं तान, वही जो उस दिन सुनाई थी !"

"राधे सुनो !"

(बांसुरी बजाते हैं।)

भैय्या! भैय्या !! यह क्या हो रहा है, राधा तो महा प्रस्थान कर रही है !!!"

"राधे, राधे, आँखे खोलो।"

"कृष्ण !"

"राधे !"

"कृष्ण !"

"भैय्या ठहरो कहां चले ? अरे ! यह तो हो चुका भैय्या ! भैय्या, सुनो !"

"कृष्ण (क्षीण स्वर से)

"राधे" (भागते हुए)

"कृष्ण" (और क्षीण स्वर)

"राधे ?" (अति क्षीण)

"कृष्ण" (स्वर कम्पन)

"राधे"

"कृष्ण" (विलीन)

पट-पतन !

लेखक की अन्य रचनायें

१.	अवारागर्द तैयार	१॥)
२.	लाला रुख (प्रेसमें)	१॥)
३.	जैण्टलमैन (,,)	१॥)
४.	लोहपुरुष (,,)	१॥)
५.	ईदो (,,)	७)
६.	जवाहर गद्यगीत	॥।)
७.	प्राणदण्ड (विचारविमर्श)	२)
८.	बुद्ध और बुद्ध धर्म ,,	३॥)
९.	धर्म के नाम पर	१॥)
१०.	कामकला के भेद	७॥)
११.	हृदय की प्यास	२॥)
१२.	हृदय का प्राण	१॥)
१३.	आरोग्य शास्त्र	१५)
१४.	पुत्र	२)

अप्राप्त अनेको स्थाई ग्राहक को सब पुस्तकें पौने मूल्य में

हिन्दी प्रेमियों से !

अगर आप हिंदी की किसी भी प्रकार की पुस्तक जैसे उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक आदि पढ़ने के शौकीन हों तो आज ही एक रु० १) भेजकर हमारे स्थायी गाहक बनिए क्योंकि अपने स्थायी ग्राहकों को हम अपनी प्रकाशित पुस्तकों पर तथा सोल एजेंसी छात्र हितकारी पुस्तक माला, हिंदुस्तानी पब्लिकेशन, विद्या भास्कर बुकडिपो प्रकाशन पर [चार आने रुपया] तथा प्रचारित पुस्तकों पर ≡) तीन आने रुपया एवं सस्ता साहित्य मंडल, सरस्वती प्रेस, हिंदुस्तानी एकोडमो, विद्या-मन्दिर ल० पर दो आना रुपया तथा अन्य हिंदुस्तान भर की हिन्दी की जनरल पुस्तकों पर डेढ़ आना प्रति रुपया और कोर्स की पुस्तकों पर दो पैसा प्रति रुपया कमाशन देते हैं। आप भी स्थायी ग्राहक बनें और हमारी छपी सब पुस्तकें पौने मूल्य में प्राप्त करें।

विशेष विवरण के लिए पत्र लिखकर बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाये। कुछ पुस्तकों का विवरण अगले पृष्ठों में पढ़ें।

जवाहर

ले०:—आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री

इसमें देश के नेताओं और विभिन्न राष्ट्रीय भावनाओं पर समय समय पर लिखे गद्य चित्रों का संकलन है। आचार्य की भाषा ने इन चित्रों में वह रंग भरा है जो किसी चित्रकार की तूलिका से भी कठिन था यह गद्य गीत आपको छोटी कहानियों का सा आनंद देंगे। और भावनाओं में सराबोर कर देंगे।

कलापूर्ण छपाई और ५ भावुक मौलिक चित्रों से सुसज्जित सजिल्द पुस्तक का मूल्य सजिल्द का ॥) मात्र

२ राधा-कृष्ण

एकाँकी नाटक

ले०:—आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री

श्री मदभागवत भक्तों के हृदय पर तो राधाकृष्ण का रूप अंकित ही है। पर उससे भी पृथक एक रूप है जो अलौकिक होते भी मानवीय भावनाओं से निर्मित है और उसी रूप को आचार्य ने इसमें नवीन शैली में लिखा गया है। मूल्य सजिल्द का॥) मात्र

३ आवारागर्द

ले०:— आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री

इस मनोवैज्ञानिक कहानी संग्रह में आचार्य ने अपनी

मोहनी कलम से ऐसी कहानियाँ लिखी हैं जिनके नायक जीवन में बदनाम है या फक्कड़ कलाकार हैं। कलाकार में तो जीवन होना ही है। पर पथभ्रष्ठ में भी जीवन की साध होती है। इसी का इतना सजीव चित्रण जिसे आप पढ़ते २ विस्मय, विमर्श, विचारोत्तेजना और कुतूहल में लीन हो जायेंगे। आचार्य की कलम के लिए इससे अधिक लिखना व्यर्थ है। सुंदर गेटअप की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) मात्र।

४ सरिता-परी

ले०—कुमारी रुक्मिणी रानी 'प्रभाकर'

बालकों के लिए बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखी गई सरस गाथा। जो उनका शिक्षामय मनोरंजन करेगी। आधी दर्जन चित्रों से विभूषित, सुन्दर गेटअप, गोल जिल्द और मूल्य सिर्फ ।=) मात्र।

५ प्रेम का मूल्य!

हिंदी के प्रगतिशील कहानीकार श्री राम शर्मा 'राम' जी की मनोरंजक कहानियों का उत्कृष्ट संग्रह। "श्रीराम जी गत १५ वर्षों से हिन्दी में कहानियाँ लिख रहे हैं। और कह सकते हैं कि वह कहानी लेखकों के भेजे हुए खिलाड़ी हैं। उनकी यह कहानियां प्रेम और त्याग के मूल्य को समझाने में समर्थ हैं।"

१५० पृष्ट की सजिल्द पुस्तक मूल्य १॥) मात्र।

लालकिले की ओर

संपादक—श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

भूमिका:— कविवर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एम. एल. ए.

आजाद हिन्द फौज नेताजी व जयहिन्द

पर कविश्रेष्ठ पंत, सनेही, दिनकर, भारतीय आत्मा अनूपशर्मा, नरेन्द्र शर्मा, बेधड़क बनारसी आदि ५५ सुप्रसिद्ध कवियों की ६५ ओजस्विनी कविताओं का सुन्दर संकलन:—

एक से एक उत्तम कविताएँ जो आप के खून में उबाल ला देंगी। सुन्दर गेट-अप वाली सजिल्द पुस्तक मूल्य २)

नया आलोक नई छाया

—लेखक श्री उदयवीर 'विराज'

प्रस्तुत संग्रह श्री विराज जी का है। इसमें लेखक ने वैदिक-काल से लेकर इतिहास काल तक की घटनाओं पर दस मर्म स्पर्शी कहानियां लिखी हैं, जिनमें नया दृष्टि कोण है और नया रूप देवत्व के धरातल को छोड़कर मानवता के धरातल को छूते हुए इसमें आपको भारतीय मानव का भावनात्मक इतिहास मिलेगा। लगभग १७५ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मू० २।) मात्र

जयहिंद सीरीज

देश प्रेमी हिन्दी पाठकों की जानकारी के लिये हमने यह सुलभ सीरीज निकाली है। इसमें सस्ती सुन्दर और सामयिक पुस्तकें निकलेंगी। मूल्य =) होगा। अभी निम्न पुस्तकें तैयार हैं।

१. जांबाज बाल सेना .... =)
२. दिल्ली पर चढ़ाई, ... =)
३. क्वीट् इंडिया या हिंदुस्तान छोड़ो... ... . =)
४. स्वतंत्र सेनानी [सुभाष] .... =)
५ नेताजी के भाषण ... . =)
६. जियाउद्दीन (नेताजी) .... =)
७. तुलादान और खून की मांग, ... =)
८. शाहनवाज, (जीवन चरित्र) .... =)
९. सहगल और ढिल्लन, ... =)
१०. सन १९४२, ... =)
११. आजाद-हिंद, ... =)
१२. आई. एन. ए. के स्मारक चिन्ह, ... =)
१३. जयहिंद; ... . =)
१४. बर्मा की खाक में, ... =)
१५. महारानी झांसी रेजीमेंट, ... =)
१६. आई० एन० ए० के मार्चिङ्ग गीत, ... =)
१७. नेता जी की जीवनी। ... ... =)

सब पुस्तकों के २=) पेशगी भेजने से डाक खर्च माफ। पताः

प्रभात-प्रकाशन दरीबा कलां देहली।